SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

समकालीन हिंदी कहानियों में पारिवारिक संबंध : एक अध्ययन

डॉ. गोपीराम शर्मा, सह आचार्य, हिंदी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

शोध सार

भारतीय संस्कृति में परिवार संकल्पना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। परिवार संस्था में समय के साथ भारी परिवर्तन देखने को मिला है। संयुक्त परिवार एकल परिवार नैनो परिवार से चलकर यह संस्था डिंक फैमिली (DINK) तक आ गई है। डिंक का अभिप्राय 'डबल इनकम नो किड्स' से लिया जा रहा है। पूंजीवाद, व्यक्तिवाद, वैश्वीकरण, निजीकरण, एवं औद्योगीकरण के इस दौर ने मानवीय संवेदनाओं को संकुचित कर दिया है। मानवीय एवं नैतिक मूल्यों में तीव्रता से परिवर्तन हो रहा है, यह बदलाव सकारात्मक की अपेक्षा नकारात्मक पक्ष अधिक लिए हुए हैं। कहानी हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण गद्य विधा है। कहानी का इतिहास प्राचीन काल से ही सुदृढ़ एवं गौरवशाली रहा है। यदि किसी कहानी में जीवन की यथार्थता मिलती है और वह जीवन जीने का रास्ता दिखाती है तो निश्चित ही वह कहानी युगबोध की संवेदना लिए हुए होती हैं। समकालीन कहानीकार परंपरागत कहानी सिद्धांतों तथा सामान्य एवं सतही कथात्मकता से मुक्त हो चुका है। वह जीवन की विसंगतियों एवं जटिलताओं को व्यापक संदर्भों में यथार्थता के साथ बेबाक अभिव्यक्ति प्रदान कर रहा है। आधुनिकता के इस दौर में समकालीन कहानी पारिवारिक मूल्यों, संबंधों एवं संवेदनाओं में बदलाव को पूर्वाग्रह रहित तथा पूर्ण सत्यता से साहित्य पटल पर पाठकों के समक्ष रखती है।

बीज शब्द

भारतीय संस्कृति, पारिवारिक संबंध, संत-ऋषि, आधुनिकताबोध, विसंगतिपूर्ण संबंध, पारिवारिक मूल्य, आत्मीयता, परंपरागत मान्यताएं, पारिवारिक विघटन, सामाजिक मूल्य, अविश्वास, समकालीन कहानी, मानवीयता, गतिशील पारिवारिक मूल्य, आधुनिकीकरण।

मूल आलेख

भारतीय संस्कृति में परिवार संकल्पना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। हमारे यहां वरिष्ठ जन ही संस्कृति और संस्कारों का समाज में प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। लेकिन जिस प्रकार चंद्रमा और सूर्य को भी ग्रहण लग जाता है, उसी प्रकार देश के संस्कारों को भी ग्रहण लग गया। 21वीं सदी में आते-आते आधुनिक जीवन शैली और भौतिकता के प्रभाव से संयुक्त परिवार प्रणाली नष्ट-भ्रष्ट हो गई और संस्कारों में भी पलीता

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

लग गया। नैतिक मूल्य जर्जर होकर गिर रहे हैं, परंपरागत संस्कार पश्चिमीकरण की भेंट चढ़ गए हैं। पूंजी, पैसे और भौतिकता ने नए मूल्य और रिश्ते स्थापित कर लिए। ''विश्व बाजारवाद के पीछे अपने खतरनाक मनसूबे के लिए अंतरराष्ट्रीय अपराधी सरगना की तरह खड़ा उत्तर-पूंजीवाद तमाम प्राचीन सभ्यताओं को हांक कर ले जाता, आधुनिकता और उसकी गुलामी में लगा पश्चिम का विज्ञानवाद संचार प्रौद्योगिकी के विषय हैं, जो हिंदी उपन्यास वैचारकी और चिंताओं को रेखांकित करता है।"[1]

भूमंडलीकरण के प्रभाव से हम ऐसे सांस्कृतिक युग में पहुंच गए हैं कि हम न तो पुरातन को पूरी तरह छोड़ पा रहे हैं और न ही नये को पूर्णतः स्वीकार कर पाए हैं। इसलिए मूल्य बहुत बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। संक्रमण की इस दशा ने हर संस्था को दुष्प्रभावित किया है। 'परिवार' नामक संस्था सबसे अधिक प्रभावित हुई है और नष्ट हुई है।

समकालीन कहानी जीवन की जटिल वास्तविकता से साक्षात्कार के लिए जूझ रही है। पारिवारिक संबंधों में तनाव से रिश्ते फीके पड़ रहे हैं। संबंधों में मानवीय संवेदना एवं सौहार्द निरंतर क्षीण होता जा रहा है। रिश्तों को बोझ की तरह ढोते प्रतीत हो रहे हैं। समकालीन कहानी में माता-पिता एवं संतान, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई- भाई, सास-बहू, नंनद-भाभी, देवरानी-जेठानी आदि संबंधों में तनाव एवं दूरियां उत्पन्न हो चुकी है। कथाकार अपने आस-पास के सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश से निरपेक्ष नहीं रह सकता है बल्कि वह बदलती परिस्थितियों को सामाजिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा साहित्य में समाहित करता है। संबंधों में पैदा होते अविश्वास, बिखराव, टूटन, विद्रूपता एवं जटिलता और संबंधों को निभाने की औपचारिकता एवं दिखावे को समकालीन कहानी में प्रखरता से उजागर किया गया है।

समकालीन कहानियों में जीवन के यथार्थ पक्ष का सजीव चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में मध्यवर्ग की दयनीय स्थिति एवं व्यथा, आज के कहानीकारों की कहानियों में अभिव्यक्त हो रही है। समकालीन कहानीकार अपने जीवनानुभवों को कहानी में रचकर उन्हें काल एवं परिवेश के वृहत्तर एवं ज्वलंत मुद्दों से जोड़ देता है। विभिन्न जीवन संदर्भों एवं मूल्यगत विघटन के इस दौर में कहानीकारों ने बदलती हुई जीवन स्थितियों तथा संबंधों की जटिलता एवं तनाव को पहचान कर अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा ज्ञानरंजन अमरकांत, कमलेश्वर, उदय प्रकाश, स्वयं प्रकाश, संजय, दूधनाथ सिंह, अखिलेश, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, अनामिका, ममता कालिया, मधु कांकरिया, नासिरा शर्मा, उषा प्रियवंदा, चंद्रकांता, मृदुला गर्ग, मेहरुन्निसा परवेज, कृष्णा अग्निहोत्री आदि उल्लेखनीय है।

पाश्चात्य मूल्यों को अपनाने तथा भौतिकता के प्रभावस्वरूप हुए एकाकी परिवारों में वृद्ध बोझ बनकर रह गए हैं। वृद्धों की चिंता को हिंदी साहित्य में 'वृद्ध विमर्श' के रूप में उद्घाटित किया जा रहा है। वृद्धों की उपेक्षा इस

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

धरती पर अचरज जगाने वाली है। इसी भारत भूमि में माता-पिता संतान प्राप्ति हेतु साधु, ऋषियों, मुनियों का आशीर्वाद लेने के लिए यज्ञादि करते थे, आशीर्वाद प्राप्ति के लिए सन्नद्ध रहते थे और जहां पुत्र भी उनकी आज्ञा मानकर राजगद्दी छोड़ दिया करते थे, अपने कंधों पर तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़ते थे। हमारे शास्त्र भी बुजुर्गों के आदर और सम्मान की गाथाएं कहते हैं। वृद्धजन सम्मान में संत-ऋषि अपनी वाणी मुखरित करते रहे हैं। यजुर्वेद कहता है-

यदापि पोश मातरं पुत्रः प्रभुदितो धयान्।

इतदगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां।।[2]

हिंदी कहानीकारों ने मुंशी प्रेमचन्द, भीष्म साहनी, ऊषा प्रियंवदा, मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि सभी ने अपनी कहानियों में परिवार की इस समस्या का चित्रण किया है। वृद्धों की जायदाद से जुड़ी समस्या को आलोकित करती मुंशी प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' एक मिसाल कायम करती है। इस कहानी में अमीर विधवा बुढ़िया अपनी जायदाद बेटों की मृत्यु के बाद भतीजे बुद्धिराम के नाम करती है। काकी की संपत्ति हथिया उसी के घर में पोते का तिलक समारोह आयोजित होता है, शहनाइयाँ बजती हैं, हलवाई तरह-तरह के पकवान बनाते हैं। बूढी काकी को तिलक के इस कार्यक्रम में लोगों की जूठन से पेट भरना पड़ जाता है। तिस पर भी वह अपमानित होती है, जब रूपा भरी सभा में उसे कोसती है, घसीट कर दूर करते हुए कहती है - ''ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका? आकर छाती पर सवार हो गई। जल जाए ऐसी जीभ।"[3]

आधुनिक युग में कहानी विधा नित नए विषयों एवं शिल्प विधान के साथ समकालीन तथ्यों एवं विमर्शों की यथार्थता को उद्घाटित कर रही है । आज के इस बदलते परिवेश ने हमें परंपरागत जीवन मूल्यों एवं आधुनिकताबोध से पनपे नवीन मूल्यों एवं परिवेश को आधुनिक संदर्भों में एक नए टकराव एवं द्वन्द्व के मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज की पीढ़ी पुराने आदर्शों एवं परम्पराओं को नकारकर आधुनिकतावादी परिवेश के साथ आगे बढ़ना चाहती है। पुरातन पारिवारिक मर्यादा एवं मान्यताएं उनके लिए सारहीन प्रतीत हो रही हैं।

चूंकि साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए साहित्यकार का यह कर्तव्य बनता है कि वह इन बदलते पारिवारिक संबंधों का साक्षात्कार समकालीन समाज को करवाए। सामाजिक परिवर्तन अचानक होने वाली प्रक्रिया नहीं है और नए ही कोई एक कारक इसके लिए जिम्मेदार है। बल्कि अनेक कारक जैसे- आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, पूंजीवाद, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव आदि इसके बदलाव में भूमिका निभाते हैं। नवीन शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव से युवा पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के विचारों एवं संस्कारों में विरोधाभास उत्पन्न हो चुका है। एक और जहां बुजुर्ग पीढ़ी पुरातन मान्यताओं एवं

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

संस्कारों को त्यागना नहीं चाहती, वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी वर्तमान दौर के संस्कारों एवं बदलते मूल्यों की पक्षधर है। परिणामस्वरुप टकराव एवं तनाव की स्थिति पैदा होती है। जिससे संबंधों में अविश्वास एवं संदेह उत्पन्न होता है। पूंजीवाद के इस दौर में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अर्थोपार्जन हर किसी का प्रधान उद्देश्य बन चुका है। अर्थ की इस अंधी दौड़ में समकालीन समाज एवं परिवार के नैतिक मूल्यों एवं संबंधों की रागात्मकता क्षीण होती जा रही है। नारी शिक्षा एवं नारी चेतना संबंधी आंदोलनों के कारण स्त्री में आत्मनिर्भरता एवं स्वतंत्रता की भावना पैदा हुई। नारी पत्नी, मां, बहू आदि पारिवारिक दायित्व निर्वाह की भूमिका के साथ-साथ अपने कार्यस्थल से भी जुड़ गई। जिससे नारी आर्थिक रूप से सुदृढ़ हुई। समानता की भावना के प्रसार के फलस्वरुप नारी को समान अवसर प्राप्त होने लगे। नारी नौकरी, निजी कार्यालयों, उद्योगों आदि में काम करने लगी। उसमें आत्मनिर्भरता एवं स्वतंत्र निर्णय लेने की भावना का प्रादुर्भाव हुआ। व्यक्तिवादी सोच भी पैदा हुई। परिणामस्वरूप परिवार में स्त्री के स्थान एवं भूमिका में परिवर्तन हुआ।

पुरानी पीढ़ी के मानवीय संबंधों एवं मूल्यों की अपेक्षा युवा पीढ़ी के जीवन मूल्यों में अपेक्षाकृत तेजी से परिवर्तन हो रहा है। समकालीन समाज में आर्थिक सुदृढता सबसे बड़ा मुद्दा बना हुआ है। संपत्ति की चाह एवं लोभ में व्यक्ति जीवन की सार्थकता समझने लगा है। समकालीन कहानीकारों ने अपने परिवेश की वास्तविकता को पूर्ण सत्यता के साथ अभिव्यक्त करते हुए मानव मन में चलने वाले ऊहापोह, द्वंद्व एवं बदलते जीवन मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक जीवन की विसंगतियों एवं जटिल समस्याओं को विषय वस्तु बनाया है।

आज की युवा पीढ़ी परंपरागत मूल्यों से ऊब चुकी है। इन मूल्यों को वह समाज के लिए निरर्थक एवं अनुपयोगी मान रही है। इसलिए एक और जहां पुरातन मूल्यों का ह्रास हो रहा है वहीं नवीन मूल्यों का सृजन हो रहा है। इसका प्रभाव आज के समाज एवं परिवार पर प्रत्यक्ष पड़ रहा है। आज की पीढ़ी स्वयं को स्वतंत्र एवं अलग रखना चाहती है। वे संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार की ओर बढ़ रहे हैं। संयुक्त परिवार के सदस्यों दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहन जैसे पवित्र रिश्तों के प्रति स्नेह, अपनत्व एवं आत्मीयता का ह्रास निरंतर बढ़ रहा है। दया, प्रेम, सहयोग, त्याग जैसे नैतिक मूल्यों पर संकीर्ण स्वार्थीपन हावी हो रहा है। आज के इस उपभोगवादी युग में परिवर्तित संबंध, अर्थ एवं स्वार्थ के संकुचित घेरे में सिकुड़ रहे हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक परिवेश में आए बदलावों को समकालीन कहानीकार विविध स्वरूपों के संदर्भ में चित्रित कर रहा है। नारी अब परंपरागत संस्कारों, मर्यादाओं एवं मूल्यों को त्याग कर अपनी अस्मिता की खोज में प्रयासरत है। ज्ञानरंजन की 'संबंध', 'अमरूद का पेड़', उषा प्रियवंदा की 'मछलियां', मन्नू भंडारी की 'क्षय' आदि कहानियों में स्त्री स्वतंत्रता एवं सामाजिक मूल्यों के संकट को चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया है।

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

मनुष्य को पहचान अपने परिवार एवं समाज से मिलती है। अपने व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास परिवार में निवास करते हुए ही संभव है। मनुष्य परिवार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। परिवार समाज की सार्वभौमिक एवं अभिन्न इकाई है। नैतिक मूल्यों एवं संस्कारों का अर्जन व्यक्ति परिवार द्वारा ही करता है। वर्तमान के पूंजीवादी दौर में धन की लालसा पारिवारिक संबंधों की सरसता एवं माधुर्य को समाप्त कर रही है। वृद्ध पीढ़ी के प्रति सम्मान का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। उदय प्रकाश रचित 'छप्पन तोले का करधन'[4] एक ऐसी कहानी है, जिसमें अर्थ का मोह पारिवारिक संबंधों को लील रहा है। आभूषण मोह भारतीय नारी समाज की पुरानी समस्या रही है। कहानी 'करधन' आभूषण की चाह पर केंद्रित है। करधन आभूषण छप्पन तोले का है। यह कहानी एक गरीब परिवार की है जो बेहद मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह कर रहा है। कहानी में प्रधान पात्र दादी है जिसके पास करधन आभूषण है। पारिवारिक सदस्य करधन को बेचकर अपनी निर्धनता को दूर करना चाहते हैं समस्त सदस्य दादी से जबरदस्ती करधन लेना चाहते हैं। जब दादी उसे देने से मना करती है तब दादी को बहुत कष्ट एवं यातनाएं झेलनी पड़ती है।

'छप्पन तोले का करधन' कहानी में उदय प्रकाश ने पूंजी की वजह से मानवीय संबंधों के टूटते रिश्तों को बहुत मार्मिक ढंग से दर्शाया है। जब घर की हालत बहुत खराब होती है तो घर वाले दादी से करधन लेना चाहते हैं। करधन के विषय में दादी के मौन हो जाने पर घर वाले उसे कोठरी में उपेक्षित छोड़ देते हैं। दादी कहती है-

''मैंने अपने छौनों को किस तरह से पाला पोसा, तुम दोनों भाइयों को पढाया। चार तोला बचा था जिसे मैंने दोनों बहूओं को बराबर बांटा और तिस पर भी तुम सबने मिलकर मेरे साथ जो किया है उसे भगवान नहीं, सारा गांव देख रहा होगा।"[5]

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी 'कुटुंब' में आधुनिक दौर के पारिवारिक मूल्यों में उद्भूत विसंगतियों का सशक्त प्रस्तुतीकरण हुआ है। परिवार का मुखिया मालकिन है। कुटुंब में बेटा, बहू, बेटी, दामाद, पोते, नातिन एवं अन्य रिश्तेदार साथ निवास करते हैं किंतु भाई का व्यवहार बहन के प्रति उपेक्षापूर्ण है। भाई अपनी बहन को अपमानित करता हुआ कहता है कि "अब उठाओ पोटली और भाई की आज्ञा मान विदा लो बिछा लो डेरा सड़क के किनारे, किसी भी जगह।"[5] इस तरह बेटा, बहन और दामाद को अपमानित करके घर से निकलवा देता है। इस विघटित एवं प्रतिकूल पारिवारिक माहौल में मालकिन बेबस होकर कहती है कि, "बेटा में इस कुटुंब से भर गई मेरे लिए शहर में कोई छोटी-मोटी कोठरी ढूंढ दो मैं अब यहां नहीं रहना चाहती।"

मन्नू भंडारी की कहानी 'शायद' कहानी का चरित्र 'राखाल' जहाज की नौकरी करता है तथा अपने पत्नी एवं बच्चों से दूर अन्यत्र रहता है। नौकरी के संदर्भ में अन्यत्र रहने के कारण भावात्मक एवं आत्मीयतापूर्ण पारिवारिक संबंधों से वंचित रहता है। अवकाश पर जब वह घर आता है तो पारिवारिक माहौल में एक

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

विशेष प्रकार का बदलाव एवं तनाव उत्पन्न होता है। बच्चों के मन में पिता के प्रति अपेक्षित मोह एवं स्नेह खंडित होता नजर आता है। बच्चे पिता के साथ अजनबी की तरह व्यवहार करते हैं। पत्नी 'माला' भी राखाल के साथ अतिथि-सा व्यवहार करती है। इस परिवर्तित स्थिति को देखकर राखाल को अपने ही कार्यस्थल पर जाना बेहतर प्रतीत होता है। इस प्रकार मन्नू भंडारी ने शायद कहानी के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों के विघटन एवं संबंधों की रिक्तता को उजागर किया है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'उसकी कराह' में सास-बहू के संदर्भ में बदलते पारिवारिक मूल्यों एवं संबंधों का संजीव अंकन किया गया है। कहानी की पात्र 'सुधा' को दिल का ट्यूमर है वह कुछ महीनों की मेहमान है। पति पर घर एवं फैक्ट्री दोनों की जिम्मेदारी है इसलिए वह पत्नी सुधा से अपनी मां को बुलाने के लिए कहता है परंतु वह नहीं चाहती क्योंकि उसे भली-भांति यह पता है कि अस्वस्थ बहू के प्रति उसकी सास का क्या व्यवहार होगा? सुधा अपने पति से कहती है कि, "जानते नहीं ? आते ही कहना शुरू कर देगी इसे कुछ नहीं हुआ है, सब बहाना है। पिछली बार बेहोश होकर चूल्हे के पास गिरी थी तब क्या हुआ था।"[6] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि सास-बहू के संबंधों में आदर भाव रिक्त हो चुका है। दोनों एक दूसरे के साथ मिलजुल कर न रहकर स्वतंत्र रहना चाहती है। सास के एकाधिपत्य एवं आदर के मोह में सास-बहू का रिश्ता दम तोड़ देता है।

अमरकांत कृत कहानी 'असमर्थ हिलता हाथ' में प्रधान चरित्र 'मीना' एक पढ़ी-लिखी लड़की है। वह अपनी इच्छानुसार अपने पसंद के लड़के से विवाह करना चाहती है लेकिन पारिवारिक सदस्य उसके विरोध में खड़े हो जाते हैं। मीना की मां भड़ककर कहती है कि, "हे भगवान, इसने हमारी इज्जत चौराहे पर फोड़ दी। मैंने पैदा होते ही इसका गला क्यों नहीं घोंट दिया? अब इसका पढ़ना लिखना बंद।"[7]

इस प्रकार जब एक शिक्षित युवती अपनी शादी का फैसला स्वयं ले रही है, जिसके कारण परंपरागत मान्यताओं एवं धारणाओं को आघात तो पहुंचा ही, साथ ही पारिवारिक सदस्यों के संबंधों में मनमुटाव एवं विघटन उत्पन्न हो रहा है।

राजेंद्र यादव की कहानी 'अपने पार' में एक ऐसा परिवार केंद्र में है जहां पति-पत्नी और पुत्र विघटित मूल्यों की विकृति के शिकार हैं। बेटा अपने पिता को चाहता है लेकिन पिता अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य स्त्री की ओर आकृष्ट हैं, पुत्र को यह पसंद नहीं। बेटा अपनी मां से भी स्नेह करता है लेकिन उसकी मां किसी अन्य पुरुष (अंकल) के साथ है। पुत्र को माता-पिता का प्यार चाहिए तथा किसी अन्य की उपस्थिति एवं हस्तक्षेप उसे मंजूर नहीं। वह इस विसंगतिपूर्ण परिवेश में छटपटाता है। परिवार के तीनों सदस्य अपनी-अपनी जगह खंडित है तथा पारिवारिक मूल्य एवं संबंध विघटित एवं जटिल स्थिति में है।

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

माता-पिता के प्रति संतानों का दायित्वबोध, सेवा भाव एवं सम्मान निरंतर क्षीण होता जा रहा है। पारिवारिक रिश्तों पर स्वार्थ हावी हो चुका है। परिवर्तित होते पारिवारिक मूल्यों के कारण सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आ रहा है जिस कारण सामाजिक ढांचा चरमरा रहा है। पारिवारिक व्यवस्था और कुटुंब के बिगड़ने से समाज के अधिकतर यह व्यवस्थाएं हो रही हैं। समकालीन कहानीकार इन चिंताओं को साहित्य में चित्रित भी कर रहा है और समाज को सजग भी कर रहा है। भौतिकवादी युग की भाग-दौड़ ने आपसी स्नेहिल संबंधों में अविश्वास एवं अस्थिरता उत्पन्न कर दी है। समकालीन कहानीकार की कहानियों में भी आधुनिक युग के बदलते संबंधों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि समकालीन कहानी पारिवारिक संबंधों के अनेक रूपों को व्यापकता से हमारे सामने रखती है। कहानीकारों ने क्षरित होते मूल्यों की, समाज एवं परिवार के व्यापक संदर्भों में छानबीन की है। आधुनिकता की रफ्तार पारिवारिक मूल्यों को झकझोर रही है। परंपरागत मान्यताओं एवं आदर्शों की जड़ें उखड़ रही है। परिवर्तित पारिवारिक संबंधों के इस दौर में समकालीन कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से यह संदेश दे रहा है कि यदि समय रहते जागरुक एवं सजग नहीं हुआ गया तो हमारी गौरवशाली संस्कृति की धरोहर, मूल्य, भावनाओं, परंपराओं, प्रेम, सौहार्द, सामंजस्य, स्नेह, मानवीयता, सेवा भावना, दायित्व बोध आदि सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर संकट मंडराता रहेगा। कह सकते हैं कि पारिवारिक संबंधों का के चित्रण करने में समकालीन कहानी का सफल हो रहा है।

सन्दर्भ संकेत

1.सिंह विजय बहादुर - उपन्यास समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 19

2.सं. डॉ. एस. वाय. होनगेकर - 21वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श, एबीएस पब्लिकेशन, वाराणसी, 2018, पृष्ठ 250

3.सं. डॉ. संजय सिंह - हिंदी कहानियाँ, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ 150

4.उदय प्रकाश, अरेबा परेबा, छप्पन तोले का करधन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2018, पृष्ठ 58

5.उदय प्रकाश- छप्पन तोले करधन, स. डॉ. एस. वाय. होनगेकर, 21वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श, एबीएस पब्लिकेशन, वाराणसी, 2018, पृष्ठ 321

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

6. मृदुला गर्ग - संगति-विसंगति, संपूर्ण कहानियां-1, लौटना और लौटना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2022, पृष्ठ 156

7. अमरकांत -अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड-1, असमर्थ हिलता हाथ, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ 367

© SARVAGYA